

10-नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी

अध्याय 1: अनौचित्य का प्रतिकार

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार अशुभ समय संसार में क्यों आते हैं और स्रष्टा ऐसे में क्या करता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, अशुभ समय संसार के इतिहास में कई बार आते रहे हैं। स्रष्टा (निर्माता) का नियम है कि वह अनुचित व्यवहार को एक सीमा से अधिक बढ़ने नहीं देता। जब अनाचारी अपनी बुरी गतिविधियाँ नहीं छोड़ते और पीड़ित व्यक्ति उन्हें रोकने के लिए तैयार नहीं होते, तब स्रष्टा का आक्रोश उभरता है। वह 'यदा-यदा हि धर्मस्य' की प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिए वचनबद्ध है।

2. प्रश्न: दुष्ट-चिन्तन और भ्रष्ट आचरण की तुलना लेखक ने किन प्राकृतिक घटनाओं से की है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने दुष्ट-चिन्तन और भ्रष्ट आचरण की तुलना पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति और पानी के बहाव से की है। जैसे गुरुत्वाकर्षण हर वस्तु को नीचे खींचता है और पानी बिना प्रयास के नीचे बहता है, वैसे ही दुष्टता पतन की ओर ले जाती है। इसके विपरीत, किसी को ऊपर उठाने के लिए असाधारण प्रयास और परिश्रम करना पड़ता है।

3. प्रश्न: पिछले दो हजार वर्षों को "अन्धकारकाल" क्यों कहा गया है?

उत्तर: पिछले दो हजार वर्षों को "अन्धकारकाल" इसलिए कहा गया है क्योंकि इस दौरान अनीति और अनाचार ने सभी मर्यादाओं का उल्लंघन किया। समर्थ लोगों ने गिरोहबद्ध होकर अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया और असमर्थों को बहुत कष्ट दिया। इस अवधि में पीड़ितों ने भी मानवीय मर्यादा के अनुरूप कोई प्रतिरोध नहीं किया, जिससे मानवीय गरिमा को चोट पहुँची।

4. प्रश्न: स्रष्टा का क्रोध कब उत्पन्न होता है और वह तब क्या करता है?

उत्तर: स्रष्टा का क्रोध तब उत्पन्न होता है जब अनाचारी अपनी बुरी गतिविधियाँ नहीं छोड़ते और पीड़ित लोग उन्हें रोकने के लिए कटिबद्ध नहीं होते। जब गलतियाँ दोनों ओर से होती हैं, तो स्रष्टा अपनी व्यवस्था को लड़खड़ाते देखकर क्रोधित होता है। ऐसे में, वह स्वयं बागडोर संभालता है और असंतुलन को संतुलन में बदलने का प्रयास करता है, जिसे अवतार-परम्परा कहा जाता है।

5. प्रश्न: लेखक वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या किसे मानता है और उसका समाधान क्या बताता है?

उत्तर: लेखक वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या यह मानता है कि ज्ञान और विज्ञान के विकास तथा सुविधाओं की प्रचुरता के बावजूद लोग खिन्न, उद्विग्न और विपन्न हैं। इसका कारण वस्तुओं की कमी नहीं, बल्कि उपलब्ध साधनों का सदुपयोग न हो पाना है। समाधान यह है कि जो कुछ उपलब्ध है, उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग किया जाए और ज्ञान-विज्ञान को नीतिमत्ता के साथ नियोजित किया जाए।

अध्याय 2: दण्ड भी और प्यार भी

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पिछली दो हजार वर्षों में शक्ति और ज्ञान-विज्ञान का उपयोग कैसे किया गया?

उत्तर: लेखक के अनुसार, पिछली दो हजार वर्षों में शक्ति का अनावश्यक उपयोग उद्दंडता और अनाचार के लिए किया गया। ज्ञान और विज्ञान के सूत्रों का भी अनर्थकारी उपयोग हुआ। विज्ञान ने युद्ध के साधन जुटाए, औद्योगीकरण से धन बटोरने पर ध्यान दिया गया, बुद्धि का उपयोग छल-छद्म में हुआ और शक्ति का प्रयोग दुर्बलों के शोषण के लिए किया गया।

2. प्रश्न: अनाचार सृष्टि व्यवस्था के प्रतिकूल क्यों है और इसका क्या परिणाम होता है?

उत्तर: अनाचार सृष्टि व्यवस्था के सर्वथा प्रतिकूल है क्योंकि यदि क्रिया की प्रतिक्रिया न हो तो संसार में अन्याय और अंधेरा फैल जाएगा। पाप से कोई नहीं डरेगा और लोग लूट-मार करने लगेंगे। इसका परिणाम यह हुआ है कि पिछली शताब्दी में दो विश्वयुद्ध हुए, प्रदूषण बढ़ा, अपराधों की बाढ़ आई, और लोगों का शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ गया।

3. प्रश्न: 'सतयुग' किसे कहा जाता था और उस समय परिस्थितियाँ कैसी थीं?

उत्तर: 'सतयुग' ऐसे संतुलित अवसर को कहा जाता था जब मनुष्य सही चाल, सही गति और सही रीति-नीति अपनाए रहते थे। तब सब कुछ ठीक-ठाक चलता था, प्रगति का संतुलन बना रहता था और परिस्थितियाँ अनुकूल थीं। मनुष्यों में आपसी स्नेह और सहयोग होने से सद्भाव का लाभ मिलता था और प्रकृति की अनुकूलता बनी रहती थी।

4. प्रश्न: स्रष्टा मर्यादा के उल्लंघन पर क्या कदम उठाता है?

उत्तर: स्रष्टा ने यह अंकुश हाथ में रखा है कि जब मर्यादा का उल्लंघन चरम सीमा तक पहुँच जाए और लोग विवेक खोकर अनाचार अपनाने लगें, तो उन्हें काबू में लाने के लिए कठोरता अपनाई जाए। उल्टी चाल चलने वाले को कड़ाई अपनाकर सीधा चलने के लिए बाध्य किया जाए। वर्तमान विपत्तियों को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है, जहाँ अनाचार की कटु प्रतिक्रिया भुगतनी पड़ रही है।

5. प्रश्न: स्रष्टा की नीति "दण्ड भी और प्यार भी" को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: स्रष्टा की नीति "दण्ड भी और प्यार भी" का अर्थ है कि वह तभी तक धमकाता है जब तक उद्दंडता समाप्त नहीं होती। जैसे ही सुधार शुरू होता है, वह अपनी रीति-नीति बदलकर प्यार और करुणा का व्यवहार अपनाने लगता है। उसका अंतिम उद्देश्य मात्र सुव्यवस्था बनाना है, जिसे प्राप्त होते ही वह कठोरता छोड़ देता है और हित कामना से प्रेरित होकर दुलार भरा व्यवहार अपनाता है।

अध्याय 3: युगसन्धि के अगले दिन

1. प्रश्न: नियन्ता (स्रष्टा) ने परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने के लिए किन दो माध्यमों को अपने हाथ में रखा है?

उत्तर: नियन्ता ने परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने और काम चलाने के लिए दो माध्यम अपने हाथ में रखे हैं। पहला है दण्ड-प्रक्रिया, जिसे 'महाकाल' भी कहा जाता है, जो दुष्प्रवृत्तियों के प्रति प्रताड़ना की व्यवस्था करता है। दूसरा है सुखद संभावना, जिसके अंतर्गत अनुशासन में रहने वाले और सत्कर्म करने वाले लोग आते हैं, जिन्हें स्वर्ग-सुख जैसी सुखद संभावनाएं मिलती हैं।

2. प्रश्न: पिछले दो हजार वर्षों में हुए अनीतिपूर्ण कार्यों का प्रतिफल क्या रहा है?

उत्तर: पिछले दो हजार वर्षों में शक्तिशाली वर्ग द्वारा क्षमताओं के दुरुपयोग और अनीतिपूर्ण कार्यों का प्रतिफल यह रहा है कि अधिकांश लोग शारीरिक और मानसिक कष्ट सह रहे हैं। दुरुपयोग के कारण दरिद्रता बढ़ी है, दुर्यवहार से द्वेष और विग्रह बढ़ा है। ईश्वरीय मर्यादाओं के उल्लंघन के कारण दैवी विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे असंतोष और असमंजस फैला है।

3. प्रश्न: कलियुग की परिस्थितियाँ कैसी बताई गई हैं और इसमें मूकदर्शक की क्या भूमिका है?

उत्तर: कलियुग की परिस्थितियाँ ऐसी बताई गई हैं जहाँ अनाचार का प्रचलन बढ़ जाता है। दुष्कर्म करने वाले तो दण्ड भुगतते ही हैं, लेकिन मूकदर्शक बनकर अनीति को देखते रहने वाले और प्रतिरक्षा न करने वाले भी

अपनी कर्तव्यहीनता, असामाजिकता और कायरता के कारण उसी वर्ग में आ जाते हैं। स्रष्टा अन्याय करने वाले और सहने वाले, दोनों को ही पातकी मानते हैं।

4. प्रश्न: युगसन्धि के दस वर्ष (1990-2000) को प्रसव जैसी स्थिति क्यों कहा गया है?

उत्तर: युगसन्धि के दस वर्ष (1990-2000) को प्रसव जैसी स्थिति इसलिए कहा गया है क्योंकि इस दौरान दोहरी भूमिकाएं होंगी। एक ओर, प्रसूता को असह्य कष्ट सहना पड़ता है, उसी तरह इन वर्षों में पिछली दो हजार वर्षों की अनीति की प्रताड़नास्वरूप अनेक कठिनाइयाँ व्यक्ति, समाज और प्रकृति में दिखेंगी। दूसरी ओर, संतान प्राप्ति की सुंदर संभावना भी मन में पुलकन पैदा करती है, यानी इस काल में नवयुग की सुंदर संभावनाएँ भी अवतरित होंगी।

5. प्रश्न: वर्तमान युगसन्धि-काल में स्रष्टा का क्या उद्देश्य है?

उत्तर: वर्तमान युगसन्धि-काल में स्रष्टा का उद्देश्य है कि मनुष्य शांति और सौजन्य के मार्ग पर चलना सीखे। वे कर्मफल की सुनिश्चित प्रक्रिया से अवगत हों और वही करें जो करना चाहिए, उस राह पर चलें जिस पर बुद्धिमान को चलना चाहिए। स्रष्टा की प्रताड़ना में भी यही हित कामना निहित है कि सुधरा हुआ बालक भविष्य में गलतियाँ न करे और सुख-सुविधा भरा जीवन जिए।

अध्याय 4: बुद्धिसंगत प्रतिपादनों की स्वीकृति

1. प्रश्न: इक्कीसवीं शताब्दी को "सुधार की शताब्दी" क्यों कहा गया है?

उत्तर: इक्कीसवीं शताब्दी को "सुधार की शताब्दी" कहा गया है क्योंकि इस दौरान कम समय में ही पिछली दो हजार वर्षों की निकृष्टता को ठीक किया जाएगा। यह नियन्ता की विशेष व्यवस्था का चमत्कार है कि देर तक भोगे जाने योग्य दण्ड की जगह, केवल डरा-धमकाकर ही लोगों को सही रास्ते पर चलाने का प्रबंध हो रहा है। समझदारी तेजी से लौट रही है और समस्याएँ जल्दी सुलझ रही हैं।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज ने नवयुग के अनुरूप प्रशिक्षण की क्या अनूठी व्यवस्था की है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज ने नवयुग के अनुरूप प्रशिक्षण की ऐसी अनूठी व्यवस्था बनाई है जो उसके सीमित साधनों के बावजूद संभव नहीं थी। यहाँ दो हजार व्यक्तियों को नियमित रूप से निःशुल्क भोजन और शिक्षा प्रदान की जाती है, ताकि गरीब-अमीर का भेद न रहे। पाँच दिन के स्वल्प प्रशिक्षण सत्रों में असाधारण प्राणशक्ति जुड़ी होती है, जिससे यह गहरा प्रभाव छोड़ता है और व्यावहारिक जीवन में स्थायी परिवर्तन लाता है।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज का मार्गदर्शन सामान्य धार्मिक उपदेशों से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज का मार्गदर्शन सामान्य धार्मिक उपदेशों से भिन्न है क्योंकि यह केवल जानकारी या वाणी का रस नहीं देता, बल्कि जीवनधारा में व्यावहारिक परिवर्तन लाता है। जहाँ सामान्यतः स्वार्थ-सिद्धि के परामर्श ही ग्राह्य होते हैं, वहीं शान्तिकुञ्ज लोक-मंगल और नवनिर्माण के अप्रचलित सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है, जिन्हें अब सामान्य बुद्धि द्वारा भी समझा और स्वीकारा जा रहा है। इसके प्रतिपादनों को किसी ने यथार्थता से विपरीत नहीं ठहराया।

4. प्रश्न: लोग पुरानी घिसी-पिटी बातों को क्यों आसानी से स्वीकार करते हैं, और युग-धर्म की नई बातों को क्यों नहीं?

उत्तर: लोग घिसी-पिटी, रटी-रटाई बातों को आसानी से स्वीकार करते हैं क्योंकि उनमें कोई विरोध का झंझट नहीं होता और उन्हें समझने में मस्तिष्क पर दबाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, समय के साथ चलने वाले युग-

धर्म में नवीन और विवादास्पद बातें होती हैं, जिन्हें स्वीकारने और हृदयंगम करने में बुद्धि पर बहुत दबाव पड़ता है। इसलिए पूर्वाग्रहों के कारण लोग ऐसी बातों के प्रति असहमति व्यक्त करते रहते हैं।

5. प्रश्न: "भलमनसाहत की रीति-नीति" का क्या अर्थ है और आजकल इसकी चर्चा क्यों हो रही है?

उत्तर: "भलमनसाहत की रीति-नीति" का अर्थ है सज्जनों को शोभा देने वाला नीतिपूर्ण आचरण और अच्छे विचार। आजकल एक ऐसी हवा चली है कि लोग दुर्बुद्धि और दुष्टता का त्याग कर भलमनसाहत अपनाने लगे हैं। यह चर्चा का विषय इसलिए बन रहा है क्योंकि नीतिपूर्वक किया गया थोड़ा उपार्जन भी पर्याप्त सुख देता है, जबकि अनीतिपूर्वक पाया गया विशाल वैभव भी संकटों को जन्म देता है।

अध्याय 5: प्रगति की दिशा में बढ़ते प्रयास

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आजकल किसे बुद्धिमान समझा जाता है और इसमें क्या विडंबना है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आजकल बुद्धिमान वही समझा जाता है जिसने बहुत सारा धन अर्जित कर लिया हो। इसमें विडंबना यह है कि भले ही इस धन-अर्जन में अवांछनीय और अनैतिक तरीके शामिल रहे हों, फिर भी उसे मान्यता मिलती है। लोग सिद्धांतों की बात तो करते हैं, पर निजी जीवन में न्याय और औचित्य को क्रियान्वित नहीं कर पाते, क्योंकि इसे अव्यावहारिक और घाटे का सौदा माना जाता है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के उदाहरणों ने लोगों की पुरानी मान्यताओं को बदलने में कैसे सफलता पाई है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज ने अपने उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि उत्कृष्टता की नीति ही वास्तव में लाभदायक है और उसी को अपनाने से व्यक्ति अपना व अपनों का वास्तविक हित कर सकता है। उन्होंने यह दिखाया है कि प्रचलित मान्यताएँ, भले ही बहुजनों द्वारा स्वीकार्य हों, लेकिन सत्य नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप, अनेकों लोग नीति-निष्ठा और समाज-निष्ठा जैसे उच्च आदर्शों को व्यावहारिक मानने लगे हैं और उन्होंने अपने जीवन में परिवर्तन किया है।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की विचारधारा को "क्रांति" क्यों कहा गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज की विचारधारा को "क्रांति" कहा गया है क्योंकि इसका आधार विवाद या शास्त्रार्थ नहीं है, बल्कि यह बात को अंतरात्मा की गहराई और मान्यता स्तर तक पहुँचाती है। इसने दुराग्रहियों और केवल लाभ सोचने वालों को भी यह मानने के लिए बाध्य किया है कि विजय अंततः सत्य की ही होती है। यह बुद्धिवादी युग में तर्क, तथ्य और प्रमाणों के साथ नवयुग की पृष्ठभूमि को बौद्धिक आधार पर प्रतिपादित करती है, जिससे असंख्य लोग अपना जीवन परिवर्तित कर रहे हैं।

4. प्रश्न: इक्कीसवीं शताब्दी को "नारी-विशिष्टता की अवधि" क्यों कहा गया है?

उत्तर: इक्कीसवीं शताब्दी को "नारी-विशिष्टता की अवधि" कहा गया है क्योंकि इस काल में नारी-प्रगति की एक नई हवा चल पड़ी है। शान्तिकुञ्ज के प्रतिपादन ने इस तथ्य को बौद्धिक आधार पर स्वीकार कराया है। अब अशिक्षित नारी समुदाय भी इस संदेश को स्वीकार कर प्रगति-पथ पर चलने का निश्चय कर रहा है। घूँघट और परदे जैसी पुरानी परंपराएँ छूट रही हैं, और महिलाएँ अध्यापन जैसे काम भी संभाल रही हैं, जिससे नर-नारी समान स्तर पर पहुँचने लगे हैं।

अध्याय 6: प्रस्तुत समस्याएँ सुलझने ही जा रही हैं

1. प्रश्न: प्राचीनकाल में अंधविश्वासों का क्या प्रभाव था और वे अब कैसे तिरोहित हो गए हैं?

उत्तर: प्राचीनकाल में घर-घर में भूत-प्रेत, टोना-टोटका जैसे अंधविश्वासों की भरमार थी। ये संदेह और

आशंका का कारण बनकर आपसी कलह और विद्वेष बढ़ाते थे। कुछ धूर्त लोगों ने इन्हें अपना व्यवसाय बना लिया था और छोटी बीमारियों को भी भूत-पलीत की करतूत मानकर लोगों को ठगते थे। अब समझदारी के उद्भव से यह सारा जाल-जंजाल तिरोहित हो गया है, मानो गधे के सिर पर कभी सींग उगे ही नहीं थे।

2. प्रश्न: लेखक बीमारियों की जड़ कहाँ मानता है और उनका समाधान क्या बताता है?

उत्तर: लेखक बीमारियों की जड़ मन के भीतर मानता है। उसका कहना है कि शरीर में तो उनका आभास मात्र होता है। यदि मन को नियंत्रित और सन्मार्गगामी बनाया जाए, तथा सरल, सौम्य और सद्भावपूर्ण विचार रखे जाएँ तो शरीर के सभी अंग सही काम करने लगते हैं और बीमारियों की जड़ कट जाती है। लोग अपना इलाज स्वयं कर लेते और भटकने की आवश्यकता न पड़ती।

3. प्रश्न: खिन्नता और उद्विग्नता का मूल कारण क्या है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है?

उत्तर: खिन्नता और उद्विग्नता का मूल कारण प्रतिकूल परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि चित्त की प्रवृत्तियाँ हैं। लोग अपनी गलती दूसरों पर मढ़ते हैं। इसे दूर करने के लिए परिस्थितियों को बदलने की भाग-दौड़ के बजाय मन की बेतुकेपन की रीति-नीति को सुधारना चाहिए। सरलता और सज्जनता का जीवन जीने से व्यक्ति अपनी वर्तमान परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकता है और सभी प्रतिकूलताएँ दूर हो सकती हैं।

4. प्रश्न: इन्द्रियों का दुरुपयोग किन कठिनाइयों का कारण बनता है?

उत्तर: इन्द्रियों का दुरुपयोग कठिनाइयों का प्रमुख कारण बनता है। यदि संयम-साधना अपनाई जाए तो अधिकांश समस्याएँ सुलझ सकती हैं। स्वादेन्द्रिय पर काबू न रखने से अनावश्यक खाने की ललक उठती है, जिससे पाचन तंत्र बिगड़ता है। कामुकता को शारीरिक मांग मानना गलत है; यह एक मानसिक विकार है। इन्द्रियों के अनौचित्यपूर्ण प्रयोग से बचने पर जीवन में सुख-शांति बनी रहती है।

5. प्रश्न: मनुष्य की बुद्धिमानी का प्रथम चिह्न क्या है और इससे क्या लाभ हो सकता है?

उत्तर: उपलब्ध वस्तुओं को ठीक प्रकार प्रयुक्त करना मनुष्य की बुद्धिमानी का प्रथम चिह्न है। यदि जीवनचर्या से जुड़े मन को सबसे अच्छा साधन माना जाता और उसके सदुपयोग-दुरुपयोग का ध्यान रखा जाता, तो सदा हर किसी को हँसती-हँसाती जिंदगी जीने का अवसर मिलता। इससे सभी प्रकार के विग्रह और अनाचार दूर हो जाते। लेखक का मानना है कि चिंतन को सही करके सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

अध्याय 7: युगान्तरीय चेतना का आलोक-विस्तार

1. प्रश्न: लेखक युगसन्धि काल की तुलना बोधिवृक्ष के बीज से क्यों करता है?

उत्तर: लेखक युगसन्धि काल की तुलना बोधिवृक्ष के बीज से करता है क्योंकि अभी जो छोटा दिख रहा है, वह अगले दिनों विशालकाय बोधिवृक्ष बन जाएगा। जैसे बोधिवृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बोध हुआ और वे बुद्ध बने, वैसे ही यह युगसन्धि काल देश-विदेशों में दिव्य बोध का संदेश प्रसारित करेगा। बीज बोने का समय थोड़ा होता है, पर वृक्ष का अस्तित्व लंबे समय तक रहता है, वैसे ही यह छोटा कालखंड बड़े परिवर्तन लाएगा।

2. प्रश्न: सन् 1990 से 2000 तक के दस वर्षों को किस प्रकार के परिवर्तन का काल बताया गया है?

उत्तर: सन् 1990 से 2000 तक के दस वर्षों को जोतने, बोने, उगाने, खाद-पानी डालने और रखवाली करने का समय बताया गया है। यह भारी उथल-पुथल का काल है, जिसमें मानवीय प्रयास अपर्याप्त होंगे और दैवी शक्ति की बड़ी भूमिका होगी। इन दस वर्षों में ऐसे परिवर्तन होंगे जो लोगों को आश्चर्यचकित कर देंगे और लगेगा कि युग बदल गया है।

3. प्रश्न: इस युगसन्धि काल में कौन से "नर-रत्न" प्रकट होंगे और उनकी पहचान क्या होगी?

उत्तर: इस युगसन्धि काल में नर-पशु, नर-कीटक और नर-पिशाच स्तर का जीवन जीने वालों में से ही बड़ी संख्या में ऐसे लोग निकलेंगे जिन्हें "नर-रत्न" या दिव्य प्रतिभा-सम्पन्न कहा जा सकेगा। इनकी पहचान यह होगी कि वे अपने समय का अधिकांश भाग प्रभु की प्रेरणा के लिए लगाएंगे। वे अपने उपार्जन का न्यूनतम हिस्सा स्वयं पर खर्च कर शेष परमार्थ-प्रयोजनों में लगाएंगे, जिससे लोकमानस का परिष्कार होगा।

4. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण का आध्यात्मिक स्वरूप क्या होगा और इसका शुभारम्भ कहाँ से हुआ है?

उत्तर: युगसन्धि महापुरश्चरण का मोटा आध्यात्मिक स्वरूप जप, यज्ञ और ध्यान होगा। इसका शुभारम्भ शान्तिकुञ्ज से हुआ है। इस प्रक्रिया से जुड़ने वाले लोग इसे सम्पन्न करेंगे, साथ ही पाँच-पाँच दिन के दिव्य प्रशिक्षण-सत्र भी चलेंगे। इन सत्रों में केवल शब्दों का नहीं, बल्कि प्राणशक्ति का भी आदान-प्रदान होगा, जिसका प्रभाव चिरकाल तक स्थिर रहेगा और चमत्कारी सिद्ध होगा।

5. प्रश्न: सन् 1995 और 2000 में कौन से प्रमुख आयोजन प्रस्तावित थे और उनका उद्देश्य क्या था?

उत्तर: सन् 1995 की वसंत पंचमी को एक लाख दीप-कुण्डों का यज्ञ-आयोजन उन सभी स्थानों पर होगा जहाँ प्रज्ञा पीठें और प्रज्ञाकेंद्र स्थापित हैं। दूसरा सोपान वसंत 2000 में सम्पन्न होगा। इस महायज्ञ के यजमान वे होंगे जो नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन करेंगे। उद्देश्य यह है कि इन दस वर्षों में सभी शिक्षितों तक नवयुग का संदेश पहुँच जाए और कुल दो करोड़ देव-मानव इसमें सम्मिलित हों।

अध्याय 8: अगले दिनों जो करना है

1. प्रश्न: सूत्र-संचालक के जीवन के प्रथम अध्याय की क्या उपलब्धियाँ बताई गई हैं?

उत्तर: सूत्र-संचालक के जीवन के प्रथम अध्याय की उपलब्धियों में साधना द्वारा आत्मपरिमार्जन, युगसाहित्य का सृजन, लाखों लोगों का संगठन, समर्थ सहायकों का विकास, लोकसेवियों का निर्माण, युगसन्धि का शिलान्यास और विचारक्रांति का सूत्र-संचालन जैसे विलक्षण कार्य शामिल हैं। इसे संतोष की बात कहा गया है क्योंकि सौंपा गया कार्य दुलार बरसने वाले स्तर के साथ पूरा हुआ।

2. प्रश्न: सूत्र-संचालक के जीवन का दूसरा अध्याय कैसे और कहाँ से प्रारम्भ हो रहा है?

उत्तर: सूत्र-संचालक के जीवन का दूसरा अध्याय सन् 1990 के वसंतपर्व से प्रारम्भ हो रहा है। यह अध्याय अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान माना गया है। इस अवधि में जो गतिविधियाँ चलेंगी, उनका केंद्र 'शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार' होगा।

3. प्रश्न: स्थूल, सूक्ष्म और कारण-शरीरों का क्या महत्व बताया गया है?

उत्तर: अध्यात्म-विज्ञानी स्थूल, सूक्ष्म और कारण-शरीरों का अस्तित्व बताते हैं। सूक्ष्म और कारण-शरीरों को स्थूल-शरीर की तुलना में असंख्य गुना अधिक शक्तिशाली कहा गया है। स्थूल-शरीर की व्यवस्था में समय खर्च होता है, जबकि सूक्ष्म-शरीर बिना झंझट के व्यापक क्षेत्र में तेजी से कार्य करता है। कारण-शरीर की शक्ति सबसे बड़ी है, जो अदृश्य जगत में हस्तक्षेप कर सकती है और ब्राह्मी चेतना से जुड़कर अद्भुत व अलौकिक कार्य कर सकती है।

4. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में होने वाले परिवर्तन कैसे होंगे और कौन उन्हें सम्पन्न करेगा?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में ऐसे परिवर्तन होंगे जो सामान्य साधनों और प्रयासों से नहीं किए जा सकते। ये परिवर्तन अदृश्य जगत से उत्पन्न सुविधाओं के माध्यम से, ब्राह्मीचेतना से जुड़े कारण-शरीर द्वारा सम्पन्न होंगे।

लोगों को यह प्रतीत नहीं होगा कि ये परिवर्तन कैसे हो रहे हैं और कौन कर रहा है, क्योंकि ये सूक्ष्म और कारण-शरीरों की शक्ति से होंगे।

5. प्रश्न: सूत्र-संचालक ने प्रत्यक्ष मिलने-जुलने का क्रम क्यों बंद कर दिया है?

उत्तर: सूत्र-संचालक ने प्रत्यक्ष मिलने-जुलने का क्रम इसलिए बंद कर दिया है क्योंकि उन्हें चेतना-स्तर पर महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करने हैं, जिसके लिए स्थूल संपर्क समेट लेना आवश्यक है। यह अदृश्य जगत में हस्तक्षेप करने और इक्कीसवीं सदी में अनेक अनर्थों से जूझने के लिए विशिष्ट प्रयासों की आवश्यकता के कारण है, जो कारण-शरीर की सत्ता द्वारा ही संभव हैं।

अध्याय 9: युग-अवतरण की प्रक्रिया

1. प्रश्न: लेखक 'नर-पशु' या 'नर-कीटक' किसे कहते हैं?

उत्तर: लेखक 'नर-पशु' या 'नर-कीटक' ऐसे व्यक्तियों को कहते हैं जिनकी अहंता कुँ के मेढक या गूलर के फल के भुनगे जैसी होती है। जिनके लिए अपना स्वार्थ, विलास और अहंकार ही सब कुछ होता है। जो केवल पेट और प्रजनन के निर्वाह तक सीमित हैं, वे मनुष्य शरीर में होने पर भी वस्तुतः कृमि-कीटक या नर-पशु जैसे ही हैं।

2. प्रश्न: वर्तमान में अगणित समस्याओं का मूल कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: वर्तमान में अगणित समस्याओं का मूल कारण यह बताया गया है कि मनुष्य-शरीर में रहने वाली चेतना का स्तर गिर गया है। जनसमुदाय का एक बड़ा भाग भ्रष्ट-चिंतन और दुष्ट-आचरण को अपनाने का अभ्यस्त हो गया है, जिसमें उसे वासना और तृष्णा की पूर्ति दिखती है। लेखक कहता है, "हम जैसा बोते हैं, वैसा ही काटते भी तो हैं," यानी हमारी दुर्गति हमारे कुकर्मों का ही परिणाम है।

3. प्रश्न: नवयुग या सतयुग का आगमन कैसे होगा?

उत्तर: नवयुग या सतयुग का आगमन इस प्रकार होगा कि लोग स्वयं को बदलेंगे। वे अपने स्वभाव में परिवर्तन करेंगे, गिरने और गिराने के बजाय उठने और उठाने की रीति-नीति अपनाएंगे, और पतन के स्थान पर उत्थान का मार्ग ग्रहण करेंगे। यह रात्रि के पलायन और प्रभात के उदय जैसा होगा, जो अब निकट से निकटतम आता जा रहा है।

4. प्रश्न: भगवान् अपने कार्य किनके माध्यम से सम्पन्न कराते हैं?

उत्तर: भगवान् अपने कार्य महामानवों और देवदूतों के माध्यम से सम्पन्न कराते रहे हैं। इन दिनों भी ऐसे ही प्रतिभाशाली देवदूत मनुष्य-शरीर में प्रकट हो रहे हैं। उनकी पहचान यह होगी कि वे अपने समय का अधिकांश भाग प्रभु की प्रेरणा के लिए लगाएंगे। वे अपने उपार्जन का न्यूनतम हिस्सा स्वयं पर खर्च कर शेष परमार्थ-प्रयोजनों में लगाएंगे, जिससे लोकमानस का परिष्कार होगा।

5. प्रश्न: नवयुग के आगमन-अवतरण का श्रेय किसे मिलेगा और उन्हें "बड़भागी" क्यों कहा गया है?

उत्तर: नवयुग के आगमन-अवतरण का श्रेय उन्हीं को उपहारस्वरूप भगवान् दे रहे हैं जो उनके काम में लगे हैं। ऐसे लोगों को ही "बड़भागी" और सच्चा भगवद्-भक्त मानना चाहिए। वे ही लोग हैं जो लोकमानस के परिष्कार, जो कि नवयुग का प्रधान स्वरूप है, के लिए अपना समय और साधन लगा रहे हैं।